विचार बिन्दु

क्षमा ब्रह्म है, क्षमा सत्य है, क्षमा भूत है, क्षमा भविष्य है, क्षमा तप है, क्षमा पवित्रता है, क्षमा ने ही संपूर्ण जगत को धारण कर रखा है। –वेदव्यास

कौन भीतर आएगा

'तुलसी बब्बा कह गए हैं'–तुलसी और सनातन के आलोक में समकालीन जीवन तथा मानवीय मूल्यों पर साप्ताहिक अतिथि विचार–श्रृंखला की यह पांचवीं कड़ी है।

नैमिषारण्य में चक्रतीर्थ और ललिता देवी के दर्शन के बाद हम सूत गद्दी की ओर जा रहे थे। रास्ते की एक पौधशाला में बीजों की थैलियाँ देखकर ठिठक गए। दो युवक फलियाँ तोड़कर बीज निकाल रहे थे। पास रखी कॉपी में पेड़ों के स्थानीय नाम, संग्रह के स्थान और तारीखें दर्ज थीं; कुछ खाने खाली भी थे। भीतर कुछ युवाओं को बीज से पौधे उगाने का प्रशिक्षण दिया जाना था।

पुष्पा बोलीं, बीज तौ जेई बटोर के लाए हैं। सीखबे कौ हक इनको सोई तौ बनत है।

आयोजन सँभाल रहे सज्जन ने सहज भाव से बताया कि प्रशिक्षण की सूची कॉलेज से आई है; ये दोनों बीज जुटाते हैं। उनकी बात में तिरस्कार नहीं था, काम का एक प्रचलित बँटवारा था। मैंने कहा कि इनका अनुभव भी प्रशिक्षण में काम आएगा। वे सहमत हुए और दोनों युवक भीतर बैठ गए।

पुष्पा ने धीरे से कहा, आज तुमाए कहे सें बैठ गए। अगली बेर तुम इते नईं रैहौ, तब?

उनका प्रश्न किसी की सदाशयता पर नहीं था, उस व्यवस्था पर था जिसमें किसी का प्रवेश अब भी किसी परिचित के आग्रह का मोहताज हो। यही इस कड़ी का प्रश्न है: जाति, वर्ग और पद प्रवेश तथा अवसर क्यों तय करें? इनका प्रभाव हमेशा निषेध के बोर्ड पर नहीं लिखा मिलता। वह हमारी सूचियों, संबोधनों और इस सहज अनुमान में रहता है कि कौन सिखाएगा और कौन केवल सामान पहुँचाएगा। दरवाजा खुला हो, पर निमंत्रण कुछ ही घरों तक जाए, तो भीतर की बैठक सबकी नहीं होती।

पुष्पा ने कॉपी की ओर देखा और कहा, सबरी के इते राम खुदई गए हते। उननें भगति देखी कि कुल–जात?

शबरी के आश्रम में राम का उत्तर इस प्रश्न का सबसे सीधा पाठ है:–

कह रघुपति सुनु भामिनि बाता। मानउँ एक भगति कर नाता।।
जाति पाँति कुल धर्म बड़ाई। धन बल परिजन गुन चतुराई।।

रामचरितमानस, अरण्यकाण्ड, दोहा 35 से पूर्व, चौपाई 2–3।

राम कहते हैं कि वे एक ही नाता मानते हैं, भक्ति का। जाति, कुल, धन, बल, परिजन, गुण और चतुराई, आगे की पंक्ति में ये सब भक्ति के बिना ऐसे हैं जैसे जलहीन बादल। मूल प्रसंग भक्ति का है, इसे नौकरी या प्रशिक्षण की पात्रता का नियम बना देना अनुचित होगा। पर यह हमारी दृष्टि की परीक्षा अवश्य करता है:– कहीं हम किसी से मिलने से पहले उसका सामाजिक परिचय ही उसका पूरा मूल्य तो नहीं मान लेते?

गीता इसी दृष्टि को ज्ञानी का लक्षण बनाती है:–

विद्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि।
शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः।।

श्रीमद्भगवद्गीता 5.18।

समदर्शिता का अर्थ यह नहीं कि सबकी योग्यता एक मान ली जाए। हाथी और गाय एक काम नहीं करते। अर्थ यह है कि भेदों के बीच भी किसी के अस्तित्व और संभावना को तुच्छ न माना जाए। भेद काम का हो सकता है; मनुष्य का नहीं।

मैंने अपनी आपत्ति रखी, लेकिन बीज का काम नाजुक है। गलत भंडारण से बीज मर जाएँ तो वन के पुनर्स्थापन को नुकसान होगा। जिम्मेदारी के लिए कौशल चाहिए।

पुष्पा का उत्तर स्पष्ट था, परख करो, खूब करो। पै सीखबे कौ मौका तौ देओ। बिना पानी दए पौधा की ऊँचाई नापबो कौन की चतुराई आय? जौन खों अजोग कहत हौ, पैले जे देख लेओ कि ऊखों ठौर मिलो हतो कि नईं।

उनका आग्रह अनुभव को अचूक मानने का नहीं था, परीक्षा से पहले अभ्यास का रास्ता खुला रखने का था। मेरे प्रश्न में एक अनकहा खतरा भी था: कहीं 'कौशल' की कसौटी उसी द्वार पर चौकीदार न बन जाए जिसके भीतर कौशल सिखाया जाता है। जिसे अभ्यास नहीं मिला, उसकी कमी दिखती है; अभ्यास न देने वाली व्यवस्था नहीं दिखती। फिर वही कमी उसे बाहर रखने का कारण बन जाती है। यह चक्र तोड़ना समता का पहला काम है।

तभी एक युवक बताने लगा कि कुछ बीज देर तक रखे जा सकते हैं, कुछ को पकते ही बोना पड़ता है। पेड़ पहचानना, पकने का समय जानना और बीज बचाकर लाना उसके हाथ का ज्ञान था। अंकुरण की जाँच वह नहीं जानता था, सीखना चाहता था। उसका अनुभव अधूरा था, जैसे किसी प्रशिक्षक का स्थानीय वन का अनुभव अधूरा हो सकता है। दोनों का मिलना पौधशाला की जरूरत थी।

इसलिए इस कड़ी का उत्तर सद्भाव पर नहीं रुकता। जाति, वर्ग और पद प्रवेश तय न करें, इसके लिए किसी भले मनुष्य का आग्रह पर्याप्त नहीं; व्यवस्था बदलनी होगी। सूचना किन घरों तक पहुँचती है, बैठक का समय किसकी सुविधा से तय होता है, बोलने और जिम्मेदारी पाने का पहला अवसर किसे मिलता है, इसका हिसाब संस्था रखे। वंचित व्यक्ति को केवल प्रतीकात्मक स्थान देकर संतोष न हो; दक्षता की परख बनी रहे, पर दक्षता अर्जित करने का अवसर जन्म, वर्ग या परिचय से न रुके।

श्रीमद्भागवत में नारद युधिष्ठिर से वर्ण के लक्षणों पर कहते हैं:–

यस्य यल्लक्षणं प्रोक्तं पुंसो वर्णाभिव्यञ्जकम्।
यदन्यत्रापि दृश्येत तत्तेनैव विनिर्दिशेत्।।

श्रीमद्भागवत 7.11.35।

जिस लक्षण से किसी वर्ण की पहचान बताई गई है, वह लक्षण अन्यत्र दिखे तो पहचान उसी से हो। इससे वर्णव्यवस्था के उन्मूलन का दावा नहीं निकलता, पर जन्म देखकर गुण का निर्णय कर लेने की आदत अवश्य प्रश्न के घेरे में आती है। आज कोई कहाँ जन्मा, कैसे कपड़े पहनता है, कौन सी बोली बोलता है, इससे उसकी सीखने की क्षमता तय नहीं होती।

पुष्पा ने पूछा, औ जिनकी पढ़ाई अधबीच छूट गई, वे कहाँ जाएँ?

ब्रह्मसूत्र का विधुराधिकरण ठीक यही प्रश्न उठाता है:–

अन्तरा चापि तु तद्दृष्टेः।।

ब्रह्मसूत्र 3.4.36, शांकरभाष्य सहित।

भाष्य उन पर विचार करता है जो निर्धनता या परिस्थितिवश आश्रम के नियमित क्रम में नहीं रह पाए, और रैक्व तथा वाचक्नवी के उदाहरण से उनका ब्रह्मविद्या का अधिकार स्वीकारता है। यह आधुनिक प्रवेश–विधान नहीं, पर उस संवेदना का शास्त्रीय आधार है जो नियमित मार्ग से छूटे मनुष्य की संभावना बचाती है। दूसरी बार पढ़ने, काम करते हुए सीखने और अनुभव को प्रमाणित करने के अवसर इसी संवेदना के आज के रूप हैं।

तभी उसी युवक ने बताया कि उसकी माँ भी बीज पहचानती और जुटाती हैं। पुष्पा ने पूछा, उनके लघे प्रशिक्षण की खबर पहुँची हती? बात एक और नाम जोड़ने से बड़ी हो गई। बैठक का समय कौन तय करता है? घर और आजीविका सँभालने वाली स्त्रियाँ उसमें आ सकेंगी? आने का किराया और छूटी मजदूरी कौन देखेगा? मुफ्त प्रशिक्षण भी किसी परिवार को बहुत महँगा पड़ सकता है। इन बाधाओं को समझना कृपा नहीं, घोषित अवसर को व्यवहार में सुलभ बनाना है।

पुष्पा ने कहा, दूसरे की बात सुनकें अपनो ज्ञान घट जात है का? गगरी में पानी डारे सें गगरी छोटी नईं होत। और तुलसी के संत–लक्षण याद दिलाए:

निज गुन श्रवन सुनत सकुचाहीं। पर गुन सुनत अधिक हरषाहीं।।
सम सीतल नहिं त्यागहिं नीती। सरल सुभाउ सबहि सन प्रीती।।

रामचरितमानस, अरण्यकाण्ड, दोहा 46(क) से पूर्व, चौपाई 1।

राम नारद से संतों के लक्षण कहते हैं: अपने गुण सुनकर सकुचाना, दूसरे के गुण सुनकर हर्षित होना, समभाव और शीतलता रखते हुए भी नीति न छोड़ना। 'सम' के साथ 'नहिं त्यागहिं नीती' का आना महत्त्वपूर्ण है। समता नियम का त्याग नहीं; नियम को सबके लिए सुलभ बनाना है। विशेषज्ञ को यह विनय मिले तो दूसरे का ज्ञान उसे खतरा नहीं लगता।

उस दिन दोनों युवक प्रशिक्षण में बैठे। अगली सूचना बीज जुटाने वाले परिवारों, स्त्रियों सहित, तक पहुँचाने और उनसे समय पूछने की बात हुई। उससे आगे का परिणाम हमारे सामने नहीं था।

इसलिए इस कड़ी का उत्तर सद्भाव पर नहीं रुकता। जाति, वर्ग और पद प्रवेश तय न करें, इसके लिए किसी भले मनुष्य का आग्रह पर्याप्त नहीं; व्यवस्था बदलनी होगी। सूचना किन घरों तक पहुँचती है, बैठक का समय किसकी सुविधा से तय होता है, बोलने और जिम्मेदारी पाने का पहला अवसर किसे मिलता है, इसका हिसाब संस्था रखे। वंचित व्यक्ति को केवल प्रतीकात्मक स्थान देकर संतोष न हो; दक्षता की परख बनी रहे, पर दक्षता अर्जित करने का अवसर जन्म, वर्ग या परिचय से न रुके।

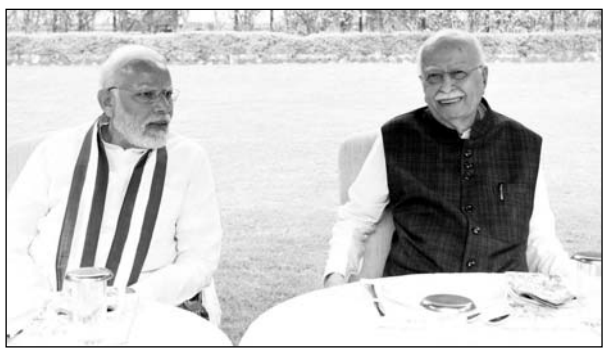
चलते समय पुष्पा मुस्कराईं, अब चलो। इनें सोई पढ़न देओ। कॉपी खुली थी। उसमें अनुभव दर्ज था, कुछ खाने अगली सीख के लिए खाली थे। समता का अर्थ उस खाली खाने को किसी की जन्मजात सीमा मान लेना नहीं, उसे भरने का अवसर सबको देना है। भीतर आने का रास्ता तभी पूरा खुलता है जब आगे बढ़ने का रास्ता भी खुला रहे।

-अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(इंडियन फारेस्ट सर्विस से सेवानिवृत्त, वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान सहित अनेक विश्वविद्यालयों में विजिटिंग प्रोफेसर)
यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं।

आडवाणी जी: एक शताब्दी की ओर बढ़ती प्रेरणादायी यात्रा



प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी



आज 8 नवंबर को श्रीलालकृष्ण आडवाणी जी अपने जीवन के सौवें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं। ये कितना सुखद संयोग है कि आज ही दीपावली का पावन पर्व भी है। प्रभु श्रीराम और दीपों के इस उत्सव के साथ आडवाणी जी के जीवन का इतना महत्वपूर्ण पड़ाव जुड़ना, इस अवसर को और भी यादगार बनाता है। इस संयोग को एक और बात विशेष बनाती है। इसी वर्ष हम जनसंघ की स्थापना के 75 वर्ष, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के 100 वर्ष और डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की 125वीं जयंती भी मना रहे हैं।

आज का ये अवसर मेरे लिए व्यक्तिगत रूप से बहुत भावुक कर देने वाला है। मैं स्वयं को सौभाग्यशाली मानता हूं कि मुझे हमेशा आडवाणी जी का स्नेह, सान्निध्य और मार्गदर्शन मिलता रहा है। आज उनके साथ बिताए हुए अनगिनत पल, उनसे जुड़ी कितनी ही स्मृतियां मन में उमड़ रही हैं।

सार्वजनिक जीवन में काम करते हुए कई दशक पहले मुझे उनके संपर्क में आने का अवसर मिला था। धीरे-धीरे हमारा ये संबंध इतना आत्मीय हो गया कि वे मेरे लिए अभिभावक की तरह बन गए। उन्होंने मेरा हाथ थामकर मुझे राजनीति की बारीकियां सिखाईं, कदम-कदम पर मेरा मार्गदर्शन किया। जीवन में जब भी कोई कठिन परिस्थिति आई, उनका अनुभव और उनकी सीख मेरे लिए संबल बने। उनकी वैचारिक स्पष्टता, उनका आत्मविश्वास और अपने सिद्धांतों के प्रति उनकी अटूट निष्ठा ने मुझे हमेशा प्रेरित किया।

आज भी जब मैं उनसे मिलने जाता हूं, तो उनके साथ बिताया हुआ समय मुझे नई ऊर्जा और नई प्रेरणा से भर देता है। आज इस अवसर पर श्रद्धेय आडवाणी जी के लिए मन में एक ही भाव उमड़ रहा है...

जीवेत शरदः शतं, पश्येम शरदः शतं।
शृणुयाम शरदः शतं।

ऐसे व्यक्तित्व बहुत कम हैं, जिनके जीवन में आधुनिक भारत के इतिहास के इतने सारे अध्याय समाए हों। आडवाणी जी का जन्म 8 नवंबर, 1927 को देव दीपावली के दिन हुआ था। 1947 में, जब वे युवा थे, तब उन्हें विभाजन की पीड़ा सहनी पड़ी। सिंध में अपना घर, अपना परिवेश, अपनी जानी-पहचानी दुनिया छोड़कर उन्हें आना पड़ा। सब कुछ पीछे छूट गया और जीवन की नई शुरुआत शून्य से करनी पड़ी। लेकिन इस कठिन अनुभव को लेकर उनके मन में कभी कोई कड़वाहट या पछतावा नहीं रहा।

कितनी भी कठिन परिस्थितियां क्यों न हों, नए सिरे से कुछ खड़ा करने का उनका ये संकल्प जीवनभर उनके साथ रहा। जनसंघ को मजबूत बनाने और बाद में भारतीय जनता पार्टी के निर्माण में भी उनका यही गुण सामने आया। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में उनके कार्यकाल में देश की राजनीति ने बड़े बदलाव देखे।

राजनीति के इतिहास में ऐसे उदाहरण बहुत कम मिलते हैं, जब दो बड़े कद के नेता इतने लंबे समय तक एक-दूसरे के साथ खड़े रहे हों। अक्सर समय के साथ राजनीतिक परिस्थितियां बदलती हैं, महत्वाकांक्षाएं टकराती हैं और साथ चलने वाले नेता भी अलग-अलग रास्तों पर निकल जाते हैं। लेकिन अटल जी और आडवाणी जी का साथ अपने आप में एक अनूठी मिसाल है। इतिहास साक्षी है, पांच-छह दशकों की इस लंबी यात्रा में दोनों एक-दूसरे के सहयोगी बने रहे। एक-दूसरे के प्रति उनका विश्वास और सम्मान हमेशा बना रहा। अटल जी के जीवन के अंतिम समय तक ये साथ कायम रहा। भारतीय राजनीति में आपसी विश्वास, सहयोग और समर्पण की ये परंपरा आज भी एक बड़ी प्रेरणा है।

आडवाणी जी जब दिल्ली आए थे, तब ये शहर विभाजन की विभीषिका से उबरने का प्रयास कर रहा था। ऐसे समय में उन्होंने जनसंघ को मजबूत बनाने के लिए खुद को पूरी तरह समर्पित कर दिया। 1967 में वे दिल्ली महानगर परिषद के अध्यक्ष बने। इस दौरान उन्होंने स्वर्गीय विजय कुमार मल्होत्रा जी के साथ मिलकर काम किया, जो मुख्य कार्यकारी पार्षद बने थे।

एक सांसद के रूप में आडवाणी जी की यात्रा 1970 के दशक से शुरू हुई। 1991 के लोकसभा चुनाव की स्मृतियां आज भी मेरे मन में ताजा हैं। उस समय तय हुआ था कि आडवाणी जी दो लोकसभा सीटों से चुनाव लड़ेंगे। इनमें से एक सीट गांधीनगर की थी। आडवाणी जी का गुजरात से बहुत पुराना नाता रहा है। आपातकाल आडवाणी जी के जीवन का एक महत्वपूर्ण मोड़ था। उस दौर में वे लोकतंत्र को बचाने और संविधान की रक्षा के संघर्ष में अग्रिम पंक्ति में खड़े रहे। आपातकाल के दौरान उन्होंने जो कुछ देखा, अनुभव किया और महसूस किया, उसकी झलक उनकी पुस्तक 'A Prisoner;s Scrap-Book' में भी मिलती है। इस पुस्तक का एक हिस्सा है-'A Tale of Two Emergencies'? इसमें उन्होंने जून 1975 से भारत में शुरू हुई घटनाओं और 1933 में हिटलर के शासन के दौरान जर्मनी में हुई घटनाओं के बीच आश्चर्यजनक समानताओं का बहुत प्रभावी ढंग से वर्णन किया है।

आडवाणी जी विपक्ष में जितने प्रखर नेता रहे, प्रशासन में भी उतने ही कुशल साबित हुए। सोमनाथ से अयोध्या तक की रथयात्रा आडवाणी जी के जीवन का एक ऐतिहासिक अध्याय है। इस यात्रा ने भारतीय समाज को एक नई और सकारात्मक दिशा दी। मैं स्वयं को सौभाग्यशाली मानता हूं कि मुझे इस ऐतिहासिक यात्रा से जुड़ने का अवसर मिला। यात्रा की परिकल्पना से लेकर उसकी तैयारियों और फिर उसे आगे बढ़ाने तक, मुझे हर चरण में योगदान देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। रथयात्रा के शुभारंभ के समय सोमनाथ में उपस्थित रहना भी मेरे लिए एक अविस्मरणीय अनुभव था।

आडवाणी जी ने इस पूरी यात्रा में जिस जीवटता और संकल्पशक्ति का परिचय दिया, वो अपने आप में प्रेरणादायी है। आडवाणी जी के व्यक्तित्व के ऐसे अनेक पहलू हैं, जो उन्हें और भी विशिष्ट बनाते हैं। उनकी सादगी और सरलता भी ऐसी ही एक विशेषता है। नवनिर्माण आंदोलन के बाद आडवाणी जी जूनागढ़ आए थे। वहां वे एक सामान्य कार्यकर्ता की तरह पूरे एक महीने तक रहे और विधानसभा चुनावों के लिए पार्टी को तैयार करने में जुटे रहे। इन चुनावों में जनता ने इंदिरा गांधी की कांग्रेस को नकार दिया था।

आडवाणी जी ने अपने आचरण से हमेशा सार्वजनिक जीवन में ईमानदारी और शुचिता का उदाहरण प्रस्तुत किया है। उन्हें पढ़ने का बहुत शौक है। जो लोग उनके साथ रहे हैं, वे जानते हैं कि वे अखबारों को भी कितने ध्यान से और कितनी बारीकी से पढ़ते रहे हैं। सिनेमा और रंगमंच से भी उनका गहरा लगाव रहा है। वर्षों तक वे बड़े उत्साह से फिल्मों की समीक्षा भी करते रहे हैं। इतिहास के प्रति उनकी गहरी समझ और उसे सहेजकर रखने की उनकी भावना भी उल्लेखनीय है। उनकी पुस्तक 'My Country My Life' में इसकी सुंदर झलक मिलती है।

आडवाणी जी का अपनी सिंधी संस्कृति से हमेशा गहरा जुड़ाव रहा है। लेह के पास सिंधु दर्शन पूजा को लोकप्रिय बनाने में भी उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मुझे स्वयं भी एक बार आडवाणी जी और जॉर्ज फर्नांडिस जी के साथ सिंधु दर्शन पूजा में शामिल होने का सौभाग्य मिला था। आडवाणी जी की इस असाधारण जीवन यात्रा की बात हो और कमला आडवाणी जी का उल्लेख न हो, तो ये यात्रा अधूरी रह जाएगी।

इतने लंबे सार्वजनिक जीवन में कमला जी हमेशा उनकी शक्ति और संबल बनी रहीं। हर कदम पर उनका साथ दिया। कराची में पले-बढ़े आडवाणी जी ने शायद ही कभी कल्पना की होगी कि जीवन उन्हें कितनी लंबी और असाधारण यात्रा पर ले जाएगा। देश के प्रति उनके योगदान के लिए कृतज्ञ राष्ट्र ने वर्ष 2024 में उन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया।

आज जब आडवाणी जी अपने जीवन के सौवें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं, तो मैं ईश्वर से उनके उत्तम स्वास्थ्य की प्रार्थना करता हूं। वे इसी तरह हम सभी को प्रेरणा देते रहें, हमारा मार्गदर्शन करते रहें।

–नरेन्द्र मोदी,
प्रधानमंत्री, भारत सरकार

दीपोत्सव का उजास और विकसित राजस्थान का संकल्प



मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा

दीपावली भारतीय संस्कृति का ऐसा अनुपम पर्व है, जो जीवन में प्रकाश, मन में उल्लास और समाज में सद्भाव का संचार करता है। अंधकार पर प्रकाश, असत्य पर सत्य और अधर्म पर धर्म की विजय का प्रतीक यह महापर्व हमारी सनातन परंपरा और आध्यात्मिक चेतना का परिचायक है। भगवान श्रीराम के चौदह वर्ष के वनवास के पश्चात अयोध्या आगमन पर प्रजाजनों ने दीप प्रज्वलित कर जिस उत्साह से उनका स्वागत किया था, वही परंपरा आज भी हमारी सांस्कृतिक स्मृति और सामूहिक चेतना में जीवंत है।

राजस्थान की धरा पर दीपावली का उल्लास विशेष रंगत लिए हुए है। इस पावन अवसर पर मैं प्रदेश के सभी नागरिकों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूं। मेरी मंगलकामना है कि यह पंचदिवसीय दीपोत्सव प्रत्येक परिवार के जीवन में सुख, शांति, आरोग्य और समृद्धि लेकर आए।

दीपावली उत्सव आत्मचिंतन और संकल्प का पर्व है। भगवान श्रीराम का जीवन मर्यादा, त्याग, कर्तव्यनिष्ठा, न्याय और लोककल्याण का आदर्श है। आज आवश्यकता है कि हम इन आदर्शों को अपने आचरण में उतारें और आदर्श परिवार, समरस समाज तथा संवेदनशील एवं जवाबदेह शासन व्यवस्था के निर्माण में योगदान दें।

परिवार हमारी सामाजिक व्यवस्था की आधारशिला है। आपसी प्रेम, विश्वास, बड़ों का सम्मान और नई पीढ़ी में संस्कारों का संचार ही सशक्त समाज की पहचान है। दीपावली हमें रिश्तों में आत्मीयता बढ़ाने, मनमुटाव दूर करने और परिवार के साथ खुशियां बांटने का अवसर देती है।

हमारी सनातन संस्कृति की शक्ति उसकी उदारता और प्रकृति के प्रति सम्मान में निहित है। पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और वनस्पति को पूजनीय मानने वाली हमारी परंपरा हमें पर्यावरण संरक्षण का संदेश देती है। अतः हमारा दायित्व है कि दीपावली का उत्सव पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता के साथ मनायें। मिट्टी के दीपकों को प्राथमिकता दें, स्थानीय कुम्हारों और शिल्पकारों के उत्पाद खरीदें तथा ग्रीन पटाखों का उपयोग कर वायु और ध्वनि प्रदूषण को नियंत्रित रखें। यह पर्व स्थानीय अर्थव्यवस्था को गति देने का भी अवसर है। वोकल फॉर लोकल की भावना को अपनाकर स्वदेशी और स्थानीय उत्पादों को प्रोत्साहन देना आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में हमारा व्यावहारिक योगदान होगा। इससे स्थानीय रोजगार बढ़ेगा और परंपरागत हुनर को नई पहचान मिलेगी।

राजस्थान की सांस्कृतिक पहचान उसकी समृद्ध लोक परंपराओं में रची-बसी है। दीपावली पर घरों में बनने वाले मांडने, रंगोली, पारंपरिक सजावट, लोकगीत और बाजारों की रौनक मरुधरा की जीवंत संस्कृति को अभिव्यक्त करते हैं। हमारी विरासत केवल अतीत की धरोहर नहीं, बल्कि भविष्य की पीढ़ियों के लिए प्रेरणा और पहचान भी है। आधुनिकता को अपनाते हुए इन परंपराओं का संरक्षण करना हमारा सामूहिक दायित्व है।

आज देश प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में विकसित भारत-2047 के लक्ष्य की ओर दृढ़ता से अग्रसर है। इस संकल्प में आर्थिक समृद्धि के साथ सामाजिक न्याय, आत्मनिर्भरता, आधुनिक आधारभूत संरचना, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, बेहतर स्वास्थ्य सेवा, महिला सशक्तीकरण और सांस्कृतिक गौरव शामिल हैं। प्रधानमंत्री जी ने देश के सामर्थ्य और सामूहिक शक्ति पर विश्वास जगाते हुए विकास को जनभागीदारी का राष्ट्रीय अभियान बनाया है।

राजस्थान इस संकल्प की पूर्ति में सक्रिय और महत्वपूर्ण भागीदारी निभाने के लिए प्रतिबद्ध है। हमारा प्रयास है कि गांव और शहर, किसान और श्रमिक, युवा और महिला सहित समाज के प्रत्येक वर्ग को विकास के समान अवसर मिलें। युवाओं को कौशल एवं रोजगार, किसानों को बेहतर सुविधाएं, महिलाओं को आत्मनिर्भरता और वंचित वर्गों को सम्मानजनक जीवन के अवसर उपलब्ध कराना हमारी प्रतिबद्धता है।

समग्र विकास सरकारी योजनाओं और संसाधनों के साथ नागरिकों की सक्रिय भागीदारी से संभव होता है। जिस प्रकार एक छोटा-सा दीपक अंधकार को दूर करने का सामर्थ्य रखता है, उसी प्रकार प्रत्येक नागरिक का सकारात्मक प्रयास राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। आइए, इस दीपावली पर हम भगवान श्रीराम के आदर्शों को आत्मसात करते हुए अपने परिवारों में संस्कार, समाज में समरसता और शासन में लोककल्याण की भावना को सुदृढ़ करने का संकल्प लें। राजस्थान को विकास, सुशासन और समृद्धि का अग्रणी प्रदेश बनाने के साथ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विकसित भारत के स्वप्न को साकार करने में अपनी पूरी सामर्थ्य से सहभागी बनें। दीपावली का यह प्रकाश हर घर में खुशहाली, हर मन में सद्भाव और विकसित राजस्थान से विकसित भारत की यात्रा में नई ऊर्जा का संचार करे। इसी मंगल कामना के साथ पुनः प्रदेशवासियों और देश-विदेश में रह रहे प्रवासी राजस्थानियों को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं।

–भजनलाल शर्मा,
मुख्यमंत्री, राजस्थान

राशिफल रविवार 8 नवम्बर, 2026



कार्तिक मास, कृष्ण पक्ष, चतुरदशी तिथि, रविवार, विक्रम संवत-2083, स्वाती नक्षत्र सोमवार प्रातः 7:24 तक, आयुष्मान योग रात्रि 3:03 तक, शकुनि करण दिन 11:28 तक, चन्द्रमा आज तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति– सूर्य-तुला, चन्द्रमा-तुला, मंगल-कर्क, बुध-तुला, गुरू-सिंह, शुक्र-कन्या, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह

आज दीपावली, श्री महालक्ष्मी पूजा, पितृकार्य अमावस्या, महाकाली पूजा, कैदार गौरी व्रत है। आज महालक्ष्मी पूजा प्रदोष काल सायं 5:36 से रात्रि 8:14 तक है। वृष लग्न सायं 6:44 से रात्रि 8:01 तक रहेगा। सायं 6:52 से सायं 7:05 के मध्य वृष लग्न कुम्भ का नवाश लक्ष्मी पूजन का सर्वश्रेष्ठ समय है। लक्ष्मी पूजन श्रेष्ठ चौघड़िया में कर सकते हैं।

श्रेष्ठ चौघड़िया– चर 8:06 से 9:28 तक, लाभ-अमृत 9:28 से 12:10 तक, शुभ 1:32 से 2:53 तक।

राहुकाल– 4:30 से 6:00 तक, सूर्योदय 6:45, सूर्यास्त 5:36

मेष

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग से महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

सिंह

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है।

धनु

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। परिवार में धार्मिक-शुभ कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

वृष

मित्रों/रिश्तेदारों से चल रहे आपसी मतभेद दूर होने लगेंगे। विवादित मामलों का निपटारा हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में धार्मिक-शुभ कार्य हो सकते हैं।

कन्या

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

मकर

अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता से मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

मिथुन

आज समय महत्वपूर्ण कार्यों में व्यतीत होगा। रचनात्मक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा। घर-परिवार में सुख-सुविधाओं में वृद्धि होगी।

तुला

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनःस्थिति में सुधार होगा। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आज आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे।

कुंभ

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। शुभ-मांगलिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। घर-परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

कर्क

घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में सुख-सुविधाओं में वृद्धि होगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

वृश्चिक

घर-परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में अनावश्यक धन खर्च होगा। आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

मीन

अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। खान-पान में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। आज विवादित मामलों का निपटारा हो सकता है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।